~~8111~~
Received
7-11-01

श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्रीमहावीर [illegible] आराधना केन्द्र
कोबा । गांधीनगर

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्ष : २५ अंक : ७
अक्टूबर २००१

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २५ अंक - ७, अक्टूबर २०[illegible]१

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Titthayar,** P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

|| जैन भवन ||

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	पल्लव और कदम्ब राजवंश	श्री कामता प्रसाद जैन	३२३
२.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	३३१
३.	मलयासुन्दरी		३३६

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय इन्द्रदूगड़ द्वारा निर्मित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

पल्लव और कदम्ब राजवंश।

श्री. कामता प्रसाद जैन

चेर, चोल और पांड्य मंडलोंका संयुक्त प्रदेश तामिल अथवा द्राविड़ राज्य कहलाता था। प्रारम्भिक-काल में चेर, चोल और पाण्ड्य राजवंश ही अपने-अपने मण्डलमें राज्याधिकारी थे; किन्तु उपरान्त उनमें परस्पर अविश्वास और अमैत्री उत्पन्न हो गये, जिसका कटु परिणाम यह हुआ कि वे परस्पर एक दूसरे के शत्रु बन गये और आपसमें राज्य के लिये छीना-छपटी करके लड़ने-झगड़ने लगे। इस अवसर से पल्लवादि वंशों के राजाओं ने लाभ उठाया, उनका उत्कर्ष हुआ।

पल्लवों की उत्पत्ति — किन्हीं विद्वानों का अनुमान है कि पल्लव-वंशके राजा मूल भारतीय न होकर उस विदेशी समुदाय में से एक थे, जो मध्य ऐशिया से आकर भारत में राज्याधिकारी हुए थे। राइस साहब ने अनुमान किया था कि पल्लव-गण पल्हव अर्थात् ***पर्थियन*** (Arsacidan Parthians) लोग थे;[१] किन्तु भारतीय विद्वान् उनके इस मत से सहमत नहीं हैं। श्री रामास्वामी ऐय्यंगर महोदय बताते हैं कि ईस्वी सातवी शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में पल्लव वंश प्रधान था। ईस्वी चौथी और पांचवी शताब्दी के प्रारम्भ तक उनका उत्कर्ष काल के गर्भ में था। प्रारंभ में इस वंश के राजा ***कांचीके शासक*** नाम से प्रसिद्ध थे। दक्षिण के संगम–साहित्य में कांचीके शासकों को ***तिरयन् और तोन्डैमन्*** कहा गया है। एवं ***अहनानूरु*** नामक ग्रन्थ से प्रकट है कि तिरयर-गण वेग्ङदम् प्रदेश के स्वामी थे। पल्लवों के समान तिरयरों का सम्बन्ध भी नागवंश के राजाओं से था। उन पर तिरयरों (Tirayars) की एक शाखा का नाम ***पल्लव-तिरयर*** था। अपने प्राधान्यकाल में कांची के यह तिरयर अपने शाखा नाम ***पल्लव*** से ही प्रसिद्ध हो गये।[१] इस लिये पल्लवों को विदेशी अनुमान करना उचित नहीं है। वह तामिल देश के ही निवासी थे।

राजनैतिक परिस्थिति — ई० आठवीं शताब्दीमें पल्लवधिराजों के उत्कर्ष-सूर्य को चालुक्यरूपी राहु ने ग्रसित कर लिया था। ई० छठी शताब्दी में ही चालुक्यों ने बादामी को **पारिस्थिति।** पल्लवों से छीन कर उसको

अपनी राजधानी बना लिया था। सातवीं शताब्दी के आरंभ में उन्होंने वेग्डीपर भी अधिकार जमा लिया था और वहाँ ***पूर्वी चालुक्य*** नामक एक स्वतंत्र राजवंश की स्थापना की थी। उपरान्त पल्लवों ने एक दफा बादामी को नष्ट किया अवश्य; परन्तु आठवीं शताब्दी में चालुक्यों ने पल्लुवों को इस बुरी तरह से हराया कि वह कहीं के भी नहीं रहे। चालुक्यों ने पल्लव राजधानी कांची में विजय–गर्व से प्रफुल्लित होकर प्रवेश किया। उधर मैसूर के गंग राजाओं ने भी पल्लवों पर आक्रमण करके उनके कुछ प्रदेश पर अधिकार प्राप्त कर लिया था। इस प्रकार पल्लव अपनी प्रतिभा और प्रतिष्ठा से हाथ धोकर येनकेन प्रकारेण अपना अस्तित्व बनाये रहे।[1]

ऐतिहासिक काल में सर्व प्रथम उनका वर्णन समुद्रगुप्त के वृत्तांत में मिलता है, जिसने पल्लवराजा विष्णुगोपको सन् ३५० ई० में पराजित किया था। अपने उत्कर्ष के समय में पल्लवों के राज्य. की उत्तरी सीमा नर्मदा थी और दक्षिणी पन्नार नदी। दक्षिण में समुद्र से समुद्र तक उनका राज्य था। उनमें पहले-पहल सिंहविष्णु नामक राजा प्रसिद्ध हुआ था। उसका यह दावा था कि उसने दक्षिण के तीनों राज्यों के अतिरिक्त लंका को भी विजय किया था।

महेन्द्रवर्मन् — उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र महेन्द्रवर्मन प्रथम हुआ। उसकी ख्याति पहाड़ों से काटी हुई गुफाओं के उन अगणित मंदिरों से है जो तिरुचनापल्ली, चिग्ङलेपुट, उत्तरी अर्काट और दक्षिण अर्काट में मिलते हैं। उसने महेन्द्रवाड़ी नामका एक बड़ा नगर बसाया और उसके समीप एक बड़ा तालाब अपने नामपर खुदवाया। इस राजा को विद्या और कला से अति प्रेम था। इसने "मत्तविलास प्रहसन्" नामक एक ग्रंथ रचा था, जिसमें भिन्न मतों का उपहास किया था।

ह्यूनत्सांग — कहते है कि पल्लव वंश का सबसे नामी राजा नरसिंहवर्मन था। उसने पुलकेशिनको परास्त करके सन् ६४२ ई० में वातापि (बादामी) पर अधिकार प्रात किया, जिससे चालुक्यों को भारी क्षति उठानी पड़ी थी। इस घटना से दो वर्ष पहले चीनी यात्री ह्युनत्सांग पल्लव राजाकी राजधानी

कांची में आया था। उसने यहां के निवासियों की वीरता, सत्यप्रियता, विद्या रसिकता और परोपकार भाव की बहुत प्रशंसा की है। उसके समय में इस नगर में लगभग एकसौ मठ थे, जिनमें दस सहस्र से अधिक भिक्षु रहते थे। लगभग इतने ही मंदिर जैनों के थे।[३] पल्लवों की एक अन्य राजधानी कृष्णाजिले में धरणीकोटा नामक नगर था, जिसका प्राचीन नाम धनकचक बतलाया जाता है। त्रिलोचन पल्लवकी यही राजधानी थी। दूसरी–तीसरी शताब्दियों में यहां के किले को जैनों के समय में मुक्तेश्वर नामक राजाने बनाया था।

काञ्चीमें जैनधर्म — कांचीनगर जैनधर्म का प्राचीन केन्द्रीय स्थान था। चीनी यात्री ह्युनत्सांग के समय में भी यहां जैनों का प्रावल्य था। दिगम्बर जैन और उनके मंदिरों की संख्या अत्यधिक थी।[३] जैन साहित्य से भी कांचीपुरमें जैनधर्म के प्रधान होने का पता चलता है। यहांका जैनसंघ उत्तर भारत के जैनियों को भी मान्य था। प्रसिद्ध जैनाचार्य श्री भट्टाकलंकदेवने यहीं राजा हिमसीतलकी सभा में बौद्धों को परास्त किया था।

पल्लव राजा और जैनधर्म — पल्लव वंश के कई राजाओं का सम्पर्क जैनधर्म से रहा था। नंदिपल्लव के वेदल शिलालेख एवं अर्काट जिले के अन्तर्गत तिन्डिवनम् तालुकेसे प्राप्त एक अन्य पल्लव शिलालेखसे पल्लवों द्वारा जैनधर्म संरक्षण वार्ताका समर्थन होता है।[४] तामिल जैनग्रन्थ ***चूलामणि*** को तोलमोलि देवरने राजा सेन्दन (६५०ई०) के राज्यकाल में उनके पिता राजा मारवर्मन् अवेनी चूलमनिकी स्मृतिमें रचा था। सालेम जिले के धर्मपुरी नामक स्थानवाले लेख से (नं० ३०७) प्रकट है कि राजा महेन्द्रवर्मन के समय में श्री मंगलसेठी के पुत्र निधिपन्ना और चंदिपन्नाने तगदूर में एक जिनालय बनवाया था। निधिपन्नाने राजा महेन्द्रसे मूलशल्ली ग्राम लेकर श्री विनयसेनाचार्य के शिष्य श्री कनकसेनजी को मंदिर जीर्णोद्धार के लिये अर्पण किया था। राजा महेन्द्रवर्मन् स्वयं जैनधर्मानुयायी था। किन्तु शैव योगी अप्पर ने महेन्द्रको शैवमतमें दीक्षित कर लिया था। शैव होने पर महेन्द्रवर्मन ने दक्षिण अर्काट जिले के पाटलिपुत्रिम् नामक स्थान के प्रसिद्ध जैनमठ को नष्टभ्रष्ट किया था और उसके स्थान पर शैव मठकी स्थापना

की थी। इस घटना से जैन धर्म को काफी धक्का लगा था। जिन ग्रामों में पहले जैनों का अधिकार था उनमें ब्राह्मणों को स्वामी बना दिया था।

पल्लव-कला — किन्तु पल्लव राजाओं के समय में विद्या एवं कलाकी विशेष उन्नति हुई थी। महेन्द्रवर्मन् स्वयं कलाकार था । उसने ***दक्षिणचित्रण्*** नामक चित्र शास्त्र की रचना की थी। उसके समय के बने हुये दो मंदिर मिलते हैं। (१) मामन्डूरका शैव मंदिर और (२) सितनवासलका जैन गुंफा मंदिर। सीतलवासल पुद्दुकोटै राज्य की राजधानी से ९ मील उत्तर दिशा में जैनों का एक प्राचीन केन्द्रस्थान है। यहां पहाड़ी की चोटी पर कुछ कोठरियाँ मुनियों के ध्यान के लिये बनी हुई हैं, जिनमें से एक में ईस्वी पूर्व तीसरी शताब्दी का एक ब्राह्मी लेख इस बात का द्योतक है कि उस समय इन कोठारियों में जैन मुनिगण रहा करते थे। इस स्थानका मूल प्राकृत नाम सिद्धण्णवास अर्थात् सिद्धों का डेरा है। इससे अनुमान होता है कि यह कोई निर्वाणक्षेत्र है। किन्हीं महामुनीश्वरने यहां से सिद्ध पद प्राप्त किया होगा; इसी लिये यह क्षेत्र सिद्धण्णवास रूप में प्रसिद्ध हुआ। यहां एक जैन गुहामंहिर है, जिसकी भीतो पर पूर्व पल्लव राजाओं की शैली के चित्र हैं। यह चित्र राजा महेन्द्रवर्मन के ही बनवाये हुये हैं और अत्यन्त सुन्दर हैं। मंदिर के मंडल में संपर्यक आसन से स्थित पुरुष परिमाण अत्यन्त सुघड़ और सुन्दर पांच तीर्थंकर मूर्तियां विराजमान हैं; जिनमें से दो मंडप के दोनों पार्श्वों में अवस्थित हैं। यहां अब दीवारों और छतपर सिर्फ दो – चार चित्र ही कुछ अच्छी हालत में बचे हैं। इसकी खूबी यह है कि बहुत थोड़ी परन्तु स्थिर और दृढ़ रेखाओं में अत्यन्त सुन्दर और मूर्त आकृतियां बड़ी उस्तादी के साथ लिख दी गई हैं। छाया आदि डालने का प्रयत्न प्रायः नहीं किया गया है। रंग बहुत थोड़े हैं–सिर्फ लाल, पीला, नीला, काला और सफेद। इन्हीं को मिलाकर कहीं-कहीं कुछ हरा, पीला, जामुनी, नारंगी आदि रंग भी बना दिये गये हैं। इतनी सरलता से बनाये गये इन चित्रों में भाव आश्चर्य जनक ढंग से प्रस्फुट हुए हैं। और आकृतियां सजीव सी जान पड़ती हैं।सारी गुहा कमलों से अलंकृत है। सामने के दोनों खम्भों को आपस में गुँथी हुई कमलोंकी बेलों से सजाया गया है। खम्भों पर नर्तकियों के चित्र हैं। बरामदे की छत के मध्य भाग में

एक पुष्करजी का चित्र है। हरे कमलपत्रों की भूमिपर लाल कमल खिलाये गये हैं; जल में मछलियां, हंस, जलमुर्गाबी, हाथी, भैंसे आदि जल विहार कर रहे हैं। चित्र के दाहिनी तरफ तीन मनुष्य कृतियां हैं, जिनकी आकृतियां आकर्षण और सुन्दर हैं। दो मनुष्य इकट्ठे जल-विहार करते दिखाये हैं; इनका रंग लाल दिया है; तीसरे का रंग सुनहला है। और वह इनसे अलग है। इसकी आकृति बड़ी मनमोहक और भव्य है। सौधर्मेन्द्रने तीर्थंकर भगवान के केवली होनेपर उनको उपदेश देने के लिये समवशरण नामक एक स्वर्गीय मण्डप रचा था। उसके चारों तरफ सात भूमियां होती हैं। जिनमें से गुजरकर ही कोई व्यक्ति उस प्रासाद में तीर्थंकरका उपदेश सुनने पहुंच सकता है। इनमें से दूसरी भूमि का नाम खातिका है। जैन मूर्ति-शास्त्र श्रीपुराण नामक ग्रन्थ के अनुसार यह खातिका भूमि तालाब होती है; जहां पहुँचकर भव्यों को स्नान और जलविहार करने को कहा जाता है। उक्त चित्र इसी खातिका भूमि का है। अन्य बचे हुए चित्रों में दो नर्तकियों के चित्र हैं जो अन्दर घुसते ही सामने के दो खम्भों पर बने हैं। एक की दाहिनी भुजा गज-हस्त और दूसरी की दण्ड-हस्त मुद्रा में फैली है। इन चित्रों में कलाकारने मानों गहनों से लदी पतली कमर और चौड़े नितंबोंवाली, चीतेकी तरह प्रचण्ड शक्तिवाली और भव्य, स्वर्गीय अप्सराओं के और शिवनटराजनकी कल्पना में प्रकट होनेवाली नृत्य-ताल और प्रचण्ड स्फूर्तिको एक ही जगह चित्रित कर दिया है। अन्दर के दाहिने खम्भे पर सम्भवतः राजा महेन्द्रवर्मन का चित्र था, जिसके कुछ निशान बाकी है। इस प्रकार पल्लवकालीन ललित काल का यह मंदिर एक नमूना है और दक्षिण के जैन मंदिरों में अपने ढंग का अकेला है।

कलभ्र — उधर पाड्यदेश में कलभ्र राजवंश का आश्रय पाकर जैनधर्म एक समय खूब ही उन्नत हुआ था। ईस्वी ५-६ वीं शताब्दी में कलभ्रों का आक्रमण दक्षिण भारत पर हुआ और उन्होंने चोल, चेर एवं पांड्य राजाओं को परास्त करके समग्र तामिल देश पर अधिकार जमा लिया था। कहा जाता है कि कलभ्र गण कर्णाटक देश के मूलनिवासी ***कल्लर*** जाति के लोग थे। पाण्ड्यराजाओं को जीतने के कारण उन्होंने ***मारन*** और ***नेदुमारन*** विरुद धारण किये थे। इनके अतिरिक्त उनके दो विरूद ***कलभ्रकल्वन*** और

मुत्तुरैयन (तीनदेशों के स्वामी) भी थे। ***पेरियपुराणम्*** नामक ग्रन्थ में उन्हें कर्णाटक देश का राजा लिखा है। निस्सन्देह उनका राजशासन तीनों ही चेर, चोल,पाठ्य देशों पर निर्बाध चलता था। जैसे ही वह तामिल देश में अधिकृत हुये, कलभ्रों ने जैन धर्म को अपना लिया। उस समय वहां जैनों की संख्या भी अत्यधिक थी। उनके सहयोग से प्रभावित होकर कहा जाता है कि कलभ्रों ने शैव धर्माचार्यों को दण्डित किया था। यह समय जैनधर्म के परम उत्कर्ष का था। इसी समय प्रसिद्ध तामिलग्रन्थ ***नालदियार*** जैनाचार्य द्वारा रचा गया था। इस ग्रन्थ में दो स्थलों पर ऐसे उल्लेख हैं जिनसे पता चलता है कि कलभ्र जैनधर्मानुयायी और तामिल साहित्य के संरक्षक थे। ***नालिदयार*** ग्रन्थमें नीतिशास्त्र विषयक चारसौ पद अंकित हैं, जिन्हें चारसौं जैन मुनियों ने रचा था। और आज जिनका प्रचार दक्षिण भारत के प्रत्येक घर में हुआ मिलता है। कलभ्र राज्याश्रय पाकर जैनधर्म उनके समय में खूब फूलाफला; परन्तु जब कदुन्गोन (Kadungon) एवं पल्लव राजाओं ने उनको राज्यश्री–विहीन कर दिया तो पांड्यदेश में जैनों के अभ्युदय को काठ मार गया। मदुरा जो उस समय तक जैनधर्म का मूल केन्द्रस्थान था, वह ब्राह्मणों के अधिपत्यको प्रगट करने लगा।

पाण्ड्यराज और जैनधर्म — बात यह हुई कि महेन्द्रवर्मन् की तरह पाण्ड्य नरेश जिनको कुनमुन्दर अथवा नेदुमारन् पाण्ड्य कहते थे, जैनधर्म से विमुख हो गये। उनका विवाह चोल राजकुमारी मङयरकर्सियर से हुआ था, जो शैव मतानुयायी और राजेन्द्र चोलकी बहन थी। शैवरानी ने अपने गुरु तिरुज्ञानसम्बन्दर को बुला भेजा और उन दोनों के उद्योग से पाण्ड्यराज शैव मत में दीक्षित हो गये। शैव होने पर कुरनसुन्दर ने जैनों को बेहद कष्ट दिये। धर्मान्धताकी चरमसीमा को वह पहुंच गया और उसने आठ हजार निरापराध जैनियों को कोल्हूमें पिलवा कर मरवा डाला, केवल इसलिये के उन्होंने शैव मत में दीक्षित होना स्वीकार नहीं किया था। खेद है कि अर्काट जिलेके त्रिवतूर नामक स्थान पर उपस्थित शैव मंदिरमें इस धर्मान्धतापूर्ण व भीषण रोमांचकारी घटना के चित्र दिवालों पर अंकित हैं और अब भी वहां के शिवमहोत्सव में सातवें दिन खास तौर पर इस घटना का उत्सव मनाया जाता है। इस नवजागृतिके जमाने में धर्मान्धता का यह प्रदर्शन घृणास्पद और दयनीय है।

चोल राजा और जैन धर्म — उपरांत चोल राजाओं के अभ्युदयकाल में भी जैन धर्म पनप न सका। राजराज चोल तो जैनों का कट्टर शत्रु था। उसके विरिश्चिपुरम् के दानपत्र से प्रगट है कि उसने एक धार्मिक कर भी जैनियों पर लगाया था। जैनों के और ब्राह्मणों के खेतों को उसने अलग-अलग कर दिया, जिसमें जैनों को हानि उठानी पड़ी; परन्तु इतने पर भी जैन धर्म को यह शैवलोग मिटा न सके। स्वयं राजराज की बड़ी बहन ने तिरुमलयपर **कुन्दवय** नामक जिनालय बनवाया था। जैनाचार्यों ने इस धर्मसंकट के अवसर पर बड़ी दूरदर्शिता से काम लिया। उन्होंने दक्षिण के अर्द्धसभ्य कुरुम्ब लोगों को जैन धर्म में दीक्षित करके अपना संरक्षक बना लिया।

कदम्ब-वंश वृक्ष।

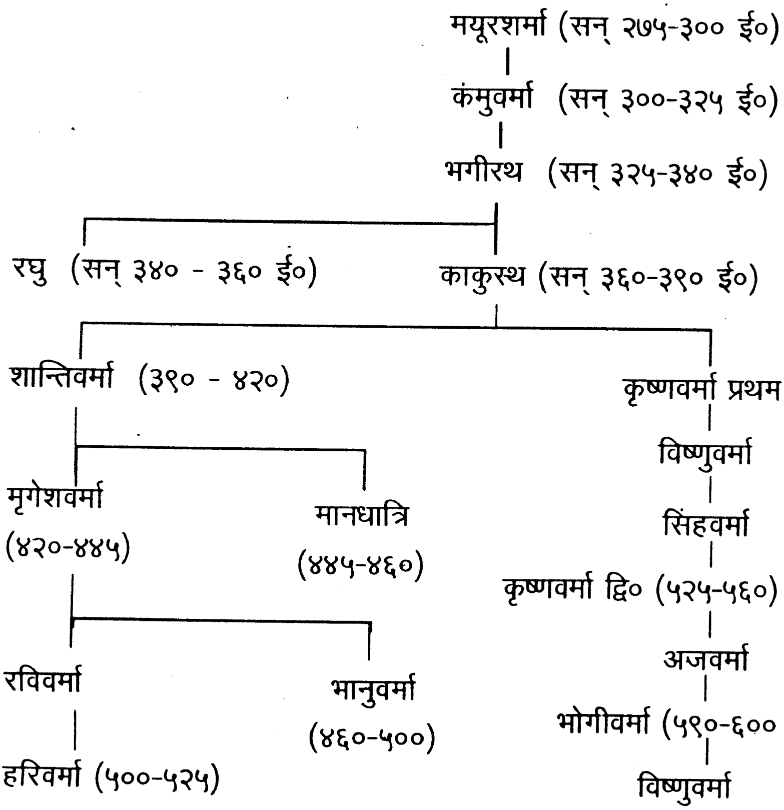
मयूरशर्मा (सन् २७५-३०० ई०)
कंमुवर्मा (सन् ३००-३२५ ई०)
भगीरथ (सन् ३२५-३४० ई०)
रघु (सन् ३४० - ३६० ई०)
काकुस्थ (सन् ३६०-३९० ई०)
शान्तिवर्मा (३९० - ४२०)
कृष्णवर्मा प्रथम
मृगेशवर्मा (४२०-४४५)
मानधात्रि (४४५-४६०)
विष्णुवर्मा
सिंहवर्मा
कृष्णवर्मा द्वि० (५२५-५६०)
रविवर्मा
भानुवर्मा (४६०-५००)
अजवर्मा
भोगीवर्मा (५९०-६००
हरिवर्मा (५००-५२५)
विष्णुवर्मा

कुरुम्बगण बड़े ही वीर और धर्मश्रद्धालु थे। उनके मुख्य राजा कमन्दप्रभु कुरुम्ब थे और उनकी राजधानी पुलक थी; जहां उन्होंने कई भव्य जिनालय बनाये थे। जैन धर्म की रक्षा के लिये कुरुम्बों नें चोलों से कई लड़ाइयाँ लड़ी थीं। आखिर अडोन्ड चोल ने उन्हें परास्त कर दिया और जैन धर्म राज्याश्रयविहीन हो हतप्रभ हो गया।

कदम्ब राजवंश – यद्यपि पल्लव और पाण्ड्य देशों में जैन धर्म की महिमा क्षीण हो गई थी, परन्तु पूर्वीय और पश्चिमीय मैसूर एवं उसके आसपास के देशों में वह समृद्धि को प्राप्त था। इस समृद्धि का कारण वहाँ के तत्कालीन राजवंशों द्वारा जैन धर्म को आश्रय मिलना था।मैसूर में कदम्ब और गंग वंश के राजाओं का शासनाधिकार चलता था। इनमें से कदम्ब वंश के राजाओं का अधिकार वर्तमान मैसूर राज्य के शिभोग और चितल्दुर्ग जिलों एवं उत्तर कनारा, धारवार और बैलगांव जिलोंपर था। इन कदम्बों की राजधानी बनवासी अथवा बैजयन्ती थी, जिसका उल्लेख यूनानी लेखक टोल्मीने किया है एवं श्री जिनसेनाचार्य ने जिसे हरिवंश राजा ऐलेय के वंशज नृप चरम द्वारा अस्तित्व में आया बताया है। सारांशतः बनवासी एक प्राचीन नगर था। बनवासी के कदम्बों के सगोत्री कदम्ब गोआ और हाग्ङल में भी शासन करते थे; परन्तु वे विशेष बलवान और समद्धिशाली नहीं थे। बनवासी के कदम्बों का राज्यकाल सन् २५० ई० से ६०० ई० तक अनुमान किया जाता है। जब कि गोआ और हांगलके कदम्बों ने सन् १०२५ से १२७५ ई० तक राज्य किया था। गोआ के कदम्बों की राजधानी हल्सी (बेलगांव) थी।

क्रमशः

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

अन्तराय कर्म के पाँच भेद है—

(१) दानान्तराय— दान देने की भावना हो, शक्ति भी हो, योग्य लेने वाला भी तैयार हो, पर परिस्थिति वश दे नहीं पाना दानान्तराय कर्म है।

(२) लाभान्तराय—लेने वाले की आवश्यकता हो, देने वाला भी तैयार हो, प्रयत्न करने पर भी इच्छित **पदार्थ** की उपलब्धि न होना लाभान्तरय है।

(३) भोगान्तराय— जो पदार्थ एक ही बार काम में लिया जा सकता है, उसे भोग कहते हैं। जैसे–मिठाई, भोजनसामग्री, पान इत्यदि।

वे सब भोग पदार्थ पर्याप्त प्रमाण में होने पर भी कार्य में न ले पाना भोगान्तराय है।

(४) उपभोगान्तराय— जो वस्तु बारंबार कार्य में लिया जा सकता है उसे उपभोक्ता कहते है, जैसे— कपड़ा, घर, घड़ी, मोटर, जूता आदि।

वे सब उपभोग के वस्तु अपने पास होते हुए भी कार्य में परिस्थितिवश न ले पाना उपभोगान्तराय कर्म है।

(५) वीर्यान्तराय—शक्ति होते हुए भी परिस्थितिवश कार्य न करना, या कार्य करने की इच्छा न होना, शक्ति का सदुपयोग न कर पाना, वीर्यान्तराय कर्म कहते है।

किसी को अन्तराय देने पर अन्तराय कर्म का बन्ध होना है।

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव ने पूर्व भव में बैल के मुँह में फसल खा न जाय इसलिये मुखोटा बाँध दिया था। कार्य पूर्ण होने पर खोलना भूल गये। वहाँ पर असावधानी के कारण अन्तराय कर्म बन्ध कर लिये। तीर्थंकर

रूप में दीक्षा लेने के बाद ४०० दिन तक प्रयत्न करने पर भी उन्हें आहार नहीं मिला। अन्तराय कर्म समाप्त होने पर अपने प्रपोत्र श्रेयांस कुमार के हाथ से आहार किये। राजा श्रेयांस कुमार वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन हस्तिनापुर में ईक्षुरस से प्रभु को पारणा कराये थे।

आत्मा जब कर्मण परमाणु को ग्रहण करती है तब से वे परमाणु कर्म नाम से पहचाने जाते हैं। उसी समय उसका स्वभाव (प्रकृति) और स्थिति (काल) भी निश्चित हो जाता है। आत्मा के साथ जो कर्मण परमाणु लगता है वे सदा के लिए नहीं रहता है। हर समय कुछ लगना है तो कुछ अलग (छुटना) भी रहता है।

कोइ परमाणु एक क्षण, तो कोई २/५ वर्ष, तो कोई १००/२०० वर्ष, तो कोई अनेक जन्म तक भी जीव के साथ रहता है। इसलिये शुभ या अशुभ कर्म का फल उसी समय या उसी जन्म में नहीं मिलता पर जन्मान्तर में भी उदय में आता है। इसी कारण से पापी जीव आज सुखी है, दोषी व्यक्ति निर्दोष बाजार में सन्त बनकर घूम रहा है, यह उसका पूर्व भव का कर्म है। पर आजका कर्म का फल तो उससे आगे कभी भी भोगना ही पड़ेगा।

आत्मा के साथ मिलते ही कर्मण परमाणु अपना प्रभाव नहीं बताता है। जैसे–मदिरा पीने वाले को पीते ही नशा नहीं आता पर कुछ समय के बाद वे परमाणु कार्यशील होते है। कैन्सर के परमाणु छः महीने में शरीर में जन्म लेते है, पर वह छः महीने के बाद कार्यशील होते है या यंत्र से दिखते हैं।

अपने कर्मों का भी वहीं स्वभाव है, बन्ध होने के कुछ समय के बाद परिपक्व होकर अपना प्रभाव दिखाता है। कर्मण रजकण के दो प्रकार के काल होते है।

(१) शांति काल — (अबाधाकाल)–कर्म परमाणु जब तक प्रभाव न दिखावे तब तक उसे शांतिकाल कहते है।

(२) विपाक काल–जब कर्म प्रभावित हो, कार्यरूप में हो उसे विपाक काल कहते है। विपाक काल को **उदयकाल** भी कहते है।

कर्म बन्ध के समय उसका जैसा स्वभाव होता है, उदयकाल में स्वभाव वैसा ही हो कोई निश्चित नहीं है। दुःख का परमाणु सुख में या सुख का परमाणु दुःख में भी परिवर्तित हो जाता है।

शांतिकाल के समय पुरुषार्थ से परिवर्तन किया जा सकता है। अर्थात् अपनी अध्यावसाय के अनुरूप भविष्य को बदल सकते है। कर्म जब तक शांतिकाल में होता है, उस समय मर्यादा में शुभ कर्म पुरुषार्थ से अशुभ को शुभ में और असत्तप्रवृत्ति से शुभ को अशुभ में बदला जा सकता है। उदयकाल के समय में भी परिवर्तन लाया जा सकता है।

इस विषय को स्पष्ट रूप में समझने के लिए रॉकफेलर की घटना को देखे।

अमेरिका का अत्यधिक धनी व्यक्ति रॉकफेलर अपने जीवन के परिवर्तन के विषय में अपनी आत्म कथा में लिखते है।

एक दिन रात्रि को बहुत बीमार पड़ा। बहुत उपचार कराया पर कोई शांति नहीं मिली। दिन-दिन बीमारी बढ़ती गई। कई रात सोया नहीं था। मन में अपार अशांति थी। करोड़ों की सम्पत्ति हजारों उपाय करने पर भी मानसिक शांति देने में असमर्थ रही। एक दिन रात्रि के समय जब सारा संसार सो रहा था तब मैं वेदना से तड़प रहा था। विचार आया धन, सत्ता, परिवार सब बेकार है, दुःख में कोई साथ नहीं दे रहा है। आजतक तो मेरी धारणा थी धन से सब कुछ संभव है। सम्पत्ति ही सर्वोपरि है। पर इस घटना से मेरा भ्रम टूट गया। स्वप्नवन सारा संसार दिखने लगा। इस दुःख ने मेरी जीवन की दिशा ही बदल दी। विचारों में परिवर्तिन आया। मैंने मन ही मन संकल्प किया कि अगर मैं स्वस्थ हो जाऊंगा तो सारा धन जन हितार्थ खर्च कर दूंगा। विचारों में परिवर्तन आते ही चमत्कार हुआ। कुछ शांति की अनुभूति हुई। धीरे-धीरे दर्द नष्ट हो गया। मैंने मेंरा सारा धन जनहित में लगा दिया।

आज भी अमेरिका में रॉकफेलर का नाम दानियों में सर्वोपरि है।

विचारों के परिवर्तन से कर्मण रज का परमाणु भी बदल जाता है। आज का वैज्ञानिक कहता है कि अपने विचारों के आधार पर रक्तकण बनते है। आप अपना ही नहीं पड़ोसी के विचारों से भी अपना मन को प्रभावित करते है। उसी विचारों के आधार पर जीवन में परिवर्तन आता है।

एक दयालु व्यक्ति पूजा, भक्ति, दान, सेवा करता है, अच्छा कर्मण परमाणु बन्ध करना है। पर बाद में कोई असदमार्गी मित्र का योग होने से दुष्टमार्ग में चला जाता है। विचारों में अब धार्मिक भावना नष्ट हो जाती है। आचरण भी भौतिकता से डुबा हुआ है। इसमें संभव है कि पूर्व में आचरित धर्म का शुभ परमाणु भी अशुभ में बदल जाय। शांति काल में शुभ परमाणु अपने विचारों के बल पर अशुभ रूप धारण कर लेता हैं।

सुख का एक वर्ष का विपाक काल दुःख के ५० वर्ष में भी फैल सकता है। कभी-कभी इसका विपरीत भी होने की संभावना हो सकती है। जीवन भर का पापाचरण करने वाला पापीजीव अन्तिम समय में अपने अशुभ परमाणु को विचारों से शुभ में भी बदल सकता है। सारे जीवन के पापी हत्यारे दृढ़ प्रहारी ने अन्तिम कुछ समय में अपने सारे जीवन का चक्र ही बदल दिया। जैन परिभाषा में इसको पश्चाताप कहते है।

प्रत्येक समय जीवात्मा अलग-अलग मानसिक अवस्था में रहती है। मानसिक अवस्था परिस्थिति के अनुरूप बदलती रहती है, और उसी भाव के अनुरूप कर्म का बन्ध होता रहता है।

शांति काल की अवस्था में अध्यावसाय के अनुरूप कर्म में परिवर्तन आता है। जीव का अशुभ कर्म शुभ में और शुभ कर्म अशुभ में बदल जाता है।

परमज्ञानी, परमात्मा ने अपने विशुद्ध केवलज्ञान से देखा कि आत्मा अनन्त ज्ञानमय-दर्शनमय-चारित्रमय-शक्तिमय होते हुए भी कर्म आवरण के कारण अज्ञानी-अन्ध-दुराचारी पराधीन रूप में जीवन जी रहा है। जीवात्मा संसार में सामान्य कर्म करते हुए हंसते-हंसते कर्म का बन्ध कर लेता है, पर उदय काल में उसे भोगने में बहुत ही दुःखी होना पड़ता है।

आत्मा को अपना जीवन सुधारने के लिए, भूलों को परिमार्जित करने के लिये नैसर्गिक शक्ति ने हमें एक सुन्दर अवसर दिया है। वह शांतिकाल इस शांतिकाल में हम कृत्कर्म को परिवर्तित या परिमार्जित कर सकते हैं।

कर्म बन्ध समय से उदयकाल तक के समय में पुरुषार्थ के द्वारा परिवर्तन निम्नोक्त आठ कारण से होता है।

(१) बन्धन करण— आत्मा स्वयं राग-द्वेष, विषय, कषाय, म[illegible]-मान्यता, हर्ष-शोक, निन्दा-स्तुति, आदि के सेवन से आकाश में रहा हुआ कर्मण राजकण स्वयं की ओर आकर्षित करता है। इस समय के कर्म बन्ध में जो आन्तरिक दशा होती है उससे बन्धन स्थिति, रस, प्रदेश निश्चित होता है। मान लिया जाय कि एक व्यक्ति ने एक बकरा को मार डाला। मरते समय बकरा और मारने वाले की मनोदशा के अनुरूप कर्म का बन्ध कर लिया। २० वर्ष के बाद बकरा का जीव उस मृत्यु समय का कर्म का फल भोगता है। १० वर्ष का शांतिकाल आगे परिणाम निर्णय करता है। हो सकता है कि वह बकरा हत्या करने वाला व्यक्ति का पुत्र या पड़ोसी बन कर मृत्यु तुल्य कष्ट दे, या फिर परिणाम में कोमलता आने से और कोई अन्य रूप में भी फल दे सकता है। इतना ही नहीं वह ५/१० वर्ष तक भी चल सकता है।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

दुःख में वियोगी मिलन

आप स्वयं समझ गये होंगे कि मगराकार मच्छ पर बैठ कर जल मार्ग से समुद्रतट पर आने वाली मलयासुन्दरी के सिवा और कोई नहीं थी। जिस समय पंच परमेष्ठि नवकार मंत्र को उच्चारण करते हुए वह भारंड पक्षी के पंजों से निकल कर समुद्र में गिरी थी। उस वक्त उसके पुण्योदय से पानी में पड़ने की जगह एक मगर मच्छ तैर रहा था और मलयासुन्दरी उसी की पीठ पर पड़ी थी।

अब उसने अपने जीवन की आशा सर्वथा छोड़ दी थी, इसलिये अन्तिम समय सावधानी पूर्वक वह परमात्मा का नाम स्मरण कर रही थी। उसका शब्द सुन कर आश्चर्य चकित हो मगर मच्छ ने गर्दन झुका कर अपनी पीठ की तरफ देखा। मलयासुन्दरी को अपनी पीठ पर बैठी देख वह एकदम स्तब्धसा हो गया।

कुछ देर पानी पर स्थित रह कर वह समुद्रतट की ओर ऐसा चला जैसे कोई शीघ्र वेग वाली किश्ती दौड़ती है। मच्छ की प्रवृत्ति देख विस्मय के साथ मलयासुन्दरी विचारने लगी—यह मत्स्य मुझे इस तरह कहाँ ले जायगा? सचमुच ही किसी हितैषी मनुष्य के समान यह मच्छ बारंबार मेरे सम्मुख देखता है। यह अज्ञान जलचर प्राणी भी मुझ पर कितना उपकार करता है ! इस प्रकार विचार करती हुई मच्छ पर मलयासुन्दरी किनारे की तरफ आने लगी। थोड़े ही समय में शीघ्रगामी किश्ती के समान वह सागर तिलक नामक नगर के बंदरगाह के पास आ पहुँची।

मलयासुन्दरी का शरीर अनेक व्रणों से परिपूर्ण था। इस समय बेदना, क्षुधा, तृषा और परिश्रम से उसका शरीर बिलकुल अशक्त, हो गया था। उसमें उठ कर चलने और अच्छी तरह बात करने की भी ताकत न रह गई थी।

मच्छ के वापिस लौट जाने पर कंदर्प राजा अपने साथियों सहित मलयासुन्दरी के पास आया। अशक्त शरीर होने पर भी मलयासुन्दरी की लावण्यता सर्वथा नष्ट न हो गई थी।

अतः उसको देख राजा अपने साथियों से बोला–यह तो कोई बड़ी सुन्दरी युवती है। घने काले भीगे हुए बालों की चोटी बड़ की जटा के समान पीठ पर से होकर नीचे तक लटक रही है। इसकी बड़ी-बड़ी आंखें संध्या समय के कमल दलों के समान मुदी हुई हैं। कौन कह सकता है कि इनके अन्दर कैसी दृष्टि छिपी हुई है? उठी हुई सीधी लम्बी नाक के नीचे होठों में राजसी दर्प से युक्त हास्य छिपा हुआ है। उसके नीचे ठोड़ी मानों सुधा पात्र के समान उस विगलित हास्य को ग्रहण करने के लिये तैयार है। ऊंची और टेढ़ी गर्दन से इस समय भी अभिमान प्रकट हो रहा है। सिकुड़े हुये गीले कपड़ो के नीचे इसका यह गोरा वदन उसी प्रकार शोभ रहा है जैसे पतले बादलों से घिरा हुआ आकाश में चंद्रमा। ऐसी दुर्दशा में भी इस सुन्दरी का तेजवान् एवं सौम्य मुख मंडल कितना सुन्दर और लुभावना है।

परन्तु इस मत्स्य का इसके साथ क्या सम्बन्ध होगा? इस तरह प्रयत्न पूर्वक वह जलचर प्राणी इसे समुद्र के किनारे क्यों छोड़ गया होगा? ये तमाम बातें इस स्त्री से ही मालूम होंगी। इसके शरीर पर नक्रचक्रादि जलचर प्राणियों के किये हुए ही ये अनेक ब्रण मालूम होते हैं। इससे यह भी साबित हेता है कि यह स्त्री किसी जहाज के डूब जाने से समुद्र में बहुत दिनों से पड़ी होगी।

इन तमाम बातों को जानने की उत्सुकता से राजा कन्दर्प बोला--सुन्दरी ! मैं सागर तिलक बन्दर का कन्दर्प नामक राजा हूँ। तू जरा भी भय न रखना। सच कह, तुम कौन हो? तुम्हारी ऐसी स्थिति क्यों हुई? यह मच्छ कहां से यहां ले आया ?

राजा के शब्द सुनकर मलयासुन्दरी को कुछ आनन्द और कुछ खेद पैदा हुआ।

वह सोचने लगी—अहा ! अभी तक भी मेरे भाग्य का अवशेष जागृत है। यहाँ पर कुछ आशा किरणों का पड़ना संभव होता है। उस दुष्ट सार्थवाह ने भी मुझे पुत्र सहित प्रथम यहाँ ही लाकर रक्खा था। जिस शहर में उसने मेरे पुत्र को रक्खा है वही यह सागर तिलक शहर है। कर्मों ने मुझे फिर यहां ही ला पटका। संभव है किसी तरह मुझे यहां मेरे प्यारे पुत्र के दर्शन हो जायें।

दूसरी तरफ मुझे यहां पर यह भय भी है, कि यह कन्दर्प राजा मेरे पिता और मेरे श्वशुर का कट्टर दुश्मन है। इसके सामने मुझे बड़ी सावधानी से रहना होगा। इसको अपना परिचय देना मेरे लिये और भी भयंकर संकट दायक होगा! यह सोच मलयासुन्दरी ने उत्तर दिया।

राजन् – इस अभागी स्त्री का वृत्तान्त सुनने की आपको क्या आवश्यकता है? मेरे वृत्तांत से आपको कुछ भी लाभ न होगा। मैं दूर देश की रहने वाली अपने पुण्य नाश के कारण ऐसी दशा को प्राप्त हुई हूँ। मलयासुन्दरी के दुःख पूर्ण उद्गार सुनकर राजा के साथी बोले—महाराज यह बेचारी इस समय दुःखभार से दबी हुई है, अपने इष्ट मनुष्यों के वियोग से दुःखित हुई मालुम होती है। इसी कारण अच्छी तरह यह बोल भी नहीं सकती। इस समय इससे कुछ भी न पूछकर इस पर कुछ उपकार करना चाहिये।

राजा फिर बोला—भद्रे ! इस समय तू अत्यन्त दुःखी मालूम होती है; तथापि अपना नाम तो बतला। मलयासुन्दरी ने मंद स्वर से उत्तर दिया-मेरा नाम मलया है।

राजा ने तुरन्त ही राजपुरुषों से पालखी मँगवाई और मलयासुन्दरी को पालखी में बैठाकर वह अपने राज महल में ले गया। उसने वैद्यों को बुलाकर संरोहिणी औषधि द्वारा मलयासुन्दरी का शरीर ठीक कराया। औषधि के प्रभाव और दासियों की परिचर्या से उसका शरीर थोड़े ही दिनों में पहले जैसा कान्तिमान् और तेजवान् हो गया।

मलयासुन्दरी का शरीर अच्छा होने पर उसके सौंदर्य और तेज को देख राजा ने उसे एक अलग महल में रखवा दिया, और उसकी सेवा में अनेक दासियाँ नियुक्त कर दीं, वह उसका सुन्दर वस्त्रालंकारों से विशेष सत्कार करने लगा। इस सत्कार के कारण मलयासुन्दरी को कंदर्प राजा का मनोगत भाव जानने में कुछ भी देर न लगी। वह सोचती थी कि यह विशेष सम्मान मुझे सुखदाई न होगा।

कुछ दिनों के बाद उसका किया हुआ अनुमान सच मालूम हुआ। उसके रूप और लावण्य से मुग्ध हो राजा कंदर्प ने अपनी दासी के द्वारा मलयासुन्दरी के समक्ष अपने मन का भाव प्रगट किया । उसने उसे अपनी पटरानी बनाने के लिये तरह तरह के प्रलोभन दिये। परन्तु मलयासुन्दरी अपने सतीत्व को प्राणाधिक समझकर जरा भी विचलित न हुई। जब दासियों द्वारा और खुद अपनी प्रार्थनाओं से भी कार्य सिद्ध होता हुआ न देखा तब वह एक रोज मलयासुन्दरी के पास जाकर बोला– सुन्दरी! दोनों तरफ के प्रेम से ही सांसारिक सुख का आनन्द आता है, इसलिये मैं तुम्हें बारंबार समझाता हूँ कि तुम मुझे प्रेम पूर्वक अंगीकार करो अन्यथा मैं तुम्हें अपनी पत्नी तो बनाऊंगा ही। क्योंकि मुझे तुम्हारे रूप और सौंदर्य ने मुग्ध बना दिया है।

मलयासुन्दरी—धिक्कार है मेरे इस सौंदर्य को, जिसके कारण मैं नरक के समान मानसिक और शारीरिक यातनायें भोगती हूँ! महाराज! आप एक प्रजा के राजा हैं; राजा का कर्तव्य होता है कि वह पुत्री के समान अपनीं प्रजा का पालन करे। जब आपके जैसे न्यायवान राजा न्याय को छोड़ कर अन्याय में प्रवृत्ति करेंगे तो संसार में न्याय किस के पास रहेगा? रक्षक स्वयं भक्षक बन जाय तो फिर उसकी रक्षा कहाँ होगी? दूसरी यह भी बात है कि एक सती के शील को विध्वंस करने का प्रयत्न करने वाले पापी मनुष्य संसार में अपनी अपकीर्ति फैलाते हैं, और जन्मान्तर में नरकादि की घोर वेदनायें भोगते हैं। महाराज! सती के शील का खंडन करना केसरीसिंह की केसरायें ग्रहण करने के समान है या दृष्टि-विष सर्प के मस्तक पर रहे हुये मणि को ग्रहण करना और सती

के शील पर हाथ डालना एक सरीखा है। इसलिये हे राजन! आपको यह विचार परित्याग करना चाहिये। आप ऐसे कृत्यों के द्वारा अपने निष्कलंक कुलको कलंकित न करें।

इस तरह समझाने पर भी कंदर्प अपने दुष्ट अभिप्राय से जरा भी पीछे न हटा। उसने निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो मैं इसे अपनी स्त्री अवश्य बनाऊंगा। मलयासुन्दरी ने यह निश्चय कर लिया था कि अगर किसी भी उपाय से मैं अपने शील की रक्षा होती न देखूंगी तो उस दुष्कृत्य से पहले मैं अपने प्राणों की आहुति दे दूंगी। इधर वासना का दास बना हुआ राजा कंदर्प उसे वश करने के लिये अनेक प्रकार के उपाय सोचता है, परन्तु उसे किसी भी उपाय में सफलता प्राप्त नहीं हुई। तब उसने मलयासुन्दरी को हमेशा छेड़कर हठिली बनाना उचित न समझा अब वह यह सोचकर कि जो काम बल से नहीं होता वह प्रेम और कपट छल से सिद्ध हो जाता है मलयासुन्दरी को देशान्तरों से भेंट में आये हुये अच्छे-अच्छे पदार्थ भेजने लगा।

एक दिन राजा अपने महल पर टहल रहा था उसी समय एक तोता कहीं से पका हुआ एक आम्रफल लिये जा रहा था; दैवयोग से वह उसकी चोंच से निकल जाने के कारण राजा के सामने आ पड़ा। राजा उस सुन्दर फल को हाथ में उठाकर सोचने लगा—अहो! फाल्गुन मास में यह आम्रफल कहां से आया? विचार करते हुए उसे मालूम हुआ कि शहर के नजदीक में जो छिन्नटंक नामक पहाड़ है उसी के एक विषम प्रदेश में ऐसा वृक्ष है जिस पर सदा काल फल लगते रहते हैं। उसी वृक्ष का फल लेकर केई पक्षी आकाश से जा रहा होगा; उससे छुटकर यह फल मेरे सामने गिरा है। यदि मैं इस फल को मलया को दूंगा तो शायद उसका मन मेरी ओर झुके।

यह सोच उसने एक नौकर के द्वारा वह आम्रफल मलयासुन्दरी के पास भेजा और सेवकों को यह भी आज्ञा दी कि आज उस स्त्री को जनाना महल में ले जाओ। बलात्कार से भी मैं अपने मनोरथ पूर्ण करूंगा। सेवक

ने वह पका हुआ आम्रफल मलयासुन्दरी के हाथ में जा दिया। मलयासुन्दरी ने आश्चर्य और हर्ष के साथ उस आम्रफल को ले लिया। वह इस अवस्था में आम्रफल मिलने पर अपने कुछ पुण्य का उदय समझ बड़ी खुश हुई। राजा की आज्ञा से उसे अन्तेउर में छोड़ा गया, यह समाचार राजा को सुनाया गया कि आम्रफल देखकर वह सुन्दरी बहुत प्रसन्न है, और उसे अन्तेउर में पहुँचा दिया गया। मलया सुन्दरी को यह बात समझने में कुछ भी देर न लगी कि आज मेरा शीलभंग करने के लिये ही मुझे अन्तेउर में लाया गया है।

युद्ध में जाते समय महाबल ने मलयासुन्दरी को जो रूप परिवर्तन की गुटिका दी थी वह उसके पुण्योदय से अभी तक पास ही थी। अतः समय देख अन्य कोई देख न सके इस तरह उसने उस गुटिका को आम्ररस में घिसकर अपने मस्तक पर तिलक कर लिया। बस फिर तो देरी ही क्या थी दिव्य गुटिका के तिलक के प्रभाव से क्षण भर में वह, स्त्री से एक सुन्दर युवा पुरुष बन गया। अब उसकी प्रसन्नता का पार न था। वह निर्भय हो प्रसन्न चित्त से अन्तेउर में टहलने लगा।

अन्तेउर में रहनेवाली अन्य राजरमणियों ने उसे देखकर बड़ा आश्चर्य किया। जिन्हें राजा के सिवा अन्य किसी पुरुष का दर्शन न होता था आज वे अनन्य रूप राशि धारण करने वाले युवक को देखकर विषयवासना से प्रेरित हो उस पर मोहित हो गई और आपस में कहने लगीं अहा ! आज अन्तेउर में महाराज के सिवा यह सुन्दर युवक कहां से आ गया? यह तो कोई देव या विद्याधर मालूम होता है।

इस तरह बोलते हुए उनके हृदय में विकार की तरंगें उसी तरह उछलने लगीं जैसे चन्द्र बिम्ब को देख समुद्र में लहरें उमड़ती हैं। जिस भांति किसी पके फल वाले वृक्ष को देखकर भूखे बन्दरों का समूह उसके फल खाने के लिये उत्सुक और लालायित होते हैं वैसे ही रणवास में रहने वाली राज महिलायें उस पुरुष के साथ क्रीड़ा करने के लिये उत्सुक हो उसके सन्मुख अनेक प्रकार के हाव भाव और कटाक्ष करने लगीं।

अंतेउरकी यह चेष्टा देख आश्चर्य को प्राप्त हुई एक दासी ने राजा के पास जाकर प्रार्थना की, कि महाराज! आज अकस्मात् आपके अंतेउर में कोई एक सुन्दर युवापुरुष बैठा है, और तमाम रानियां उसके साथ हँसी मजाक कर रही हैं।

यह समाचार सुनते ही राजा कंदर्प शीघ्र ही महल में आया और साक्षात् कामदेव के समान सुन्दर रूपवान उस नवीन पुरुष को देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। वह एक दम बोल उठा– यह पुरुष कौन है? इसने महल में किस तरह प्रवेश किया? इस प्रश्न के उत्तर में राजा को कुछ भी जबाब न मिला। अकस्मात् याद आने से राजा ने मलयासुन्दरी की तलाश कराई; परन्तु ढूंढने पर भी उसका पता न लगा अतः आँखें चढ़ा कर उसने द्वारपाल से पूछा–अरे! वह जो नई स्त्री आज यहाँ पर भेजी गई थी वह कहाँ है? वह हाथ जोड़ कर नम्रता से बोला—महाराज! थोड़ी ही देर हुई वह स्त्री यहाँ ही बैठी थी; वह महल से बाहर बिलकुल नहीं गई, क्योंकि मैं दरवाजे पर सावधान हो पहरा दे रहा हूँ। यह सुन राजा विचारने लगा—किसी प्रयोग से उस सुन्दरी ने पुरुष रूप धारण किया है! तथा यह जानने के लिए राजा ने उससे प्रश्न किया अरे? तू कौन है!

मलया०—— मैं कौन हूँ ? क्या तू स्वयं अपनी नजर से नहीं देख सकता? राजा ने कुछ देर तक विचार कर निश्चय कर लिया कि यह उस सुन्दरी ने ही मेरे स्वाधीन न होने के कारण किसी तरह अपना रूप परिवर्तन कर लिया है। अगर यह यहाँ पर रहेगा तो कुछ और अनर्थ होने का संभव है। यह विचार कर राजा बोला–सुभटों? क्या देखते हो? इस पुरुष को महल से बाहर निकालो और दूसरे मकान में नजर कैद कर दो! राजाज्ञा होते ही राजपुरुषों ने उसे बाहर निकाल कर नजदीक के एक मकान में अपनी निगरानी में नजर कैद कर दिया।

मलयासुन्दरी को इससे बड़ा हर्ष हुआ। अपने शील की रक्षा देख उसके आनन्द का पार न रहा। परन्तु इतने मात्र से ही उसके रूप में मुग्ध बना हुआ राजा कंदर्प उसे छोड़ नहीं सकता था। थोड़ी ही देर के बाद वह

फिर से पुरुषरूपा मलयासुन्दरी के पास आया, और अनेक प्रकार के अनुकूल उपचारों से पूछने लगा; सुन्दरी! तुमने अपना यह पुरुष रूप किसलिए और किस प्रयोग से बना लिया? किस प्रयोग से फिर तुम्हारा स्त्री रूप बनेगा? मलयासुन्दरी ने इस बात का कुछ भी उत्तर न दिया। इससे क्रोधातुर हो राजा ने उसको बहुत ही ताड़ना–तर्जना की। पराधीन बनी हुई अभागिनी मलयासुन्दरी यह सब कुछ दुःख मौन रह कर सहन कर गई। किन्तु कामान्ध कंदर्प ने उसका पीछा नहीं छोड़ा जब उस पर प्रतिदिन मार पीट का क्रम शुरु कर दिया, तब अति दुःखित हो उसने सोचा, कि कितने दिन तक इस नारकीय दुःख को सहा जाय! ऐसी कदर्थनाओं से आत्महत्या करना श्रेयस्कर है। परन्तु यहाँ से किसी तरह निकल भागूं तब न ? पुरुष रूप में अब मुझे अपने शील भंग होने का तो कहीं पर भी भय नहीं है। और इसी कारण इस तरह की यातनायें भी मुझे अन्यत्र न सहनी पड़ेगी।

एक दिन रात के समय जब कि उसका पहरेदार निद्रा में पड़ा सो रहा था अन्य कोई न जान सके इस तरह वहाँ से निकल मलयासुन्दरी शहर से बाहर आ पहुँची। स्त्री जाति होने कारण एवं अनुभव और धैर्य के अभाव से वह वहाँ से दूर भाग जाने के लिये समर्थ न हुई। दुःख से मुक्त होने के लिये मृत्यु की शरण लेने के सिवा उसे अन्य कोई उपाय न सूझा। वह आत्महत्या करने का निश्चय कर वहाँ पर रहे हुए एक जीर्ण मठ की दीवार के पास खड़ी हो गई। उसी दीवार के पास एक बड़ा अन्धकूप— पानी रहित कुँआ था; वह मलयासुन्दरी के देखने में आ गया; उसमें झंपापात करने के इरादे से वह उस कुएँ के किनारे पर खड़ी हो विचारने लगी– प्रातःकाल होने पर मुझे वहाँ न देखकर अवश्य ही राजा और राजपुरुष मेरी खोज में मेरे पीछे आयेंगे और क्रोधांध होकर मुझे बुरी मृत्यु से मारेंगे। इससे इस कुएँ वे में कूद कर स्वयं मर जाना अच्छा है।

यह सोचकर उसने पंच परमेष्ठि मंत्र का स्मरण किया। मरने का निश्चिय करने पर भी वह महाबल कुमार का प्रेम और भक्तिभाव भूल न सकी। अतः अन्त में दुर्दैव को उपालंभ देती हुई वह बोल उठी–हे दुर्दैव!

तूने मेरे बन्धुओं से वियोगन बनाई। और तूने ही निःस्सीम प्रेमवाले प्रियतम महाबल से भी मुझे जुदा कराया! हे दैव! जन्मान्तर में तो तू अवश्य ही मुझ पर प्रसन्न हो मेरे प्रियतम के साथ मेरा मिलाप करा देना। हे जंगल के पशुपक्षियों ! अगर तुम्हें कहीं पर भी मेरे स्वामी महाबल मिल जायँ तो उन्हें मेरा अन्तिम नमस्कार पूर्वक यह संदेश सुनाना कि उस तुम्हारी वियोगिनी मलयासुन्दरी ने दुःख से कातर हो, आपको याद करती हुई इस अन्धकूप में प्राण त्याग किया है। इस प्रकार दैव को उपालम्भ देकर और पशु-पक्षियों को अपना संदेश महाबल से सुनाने की याचना कर मलयासुन्दरी उस अन्ध कूप में कूद पड़ी।

अन्धकूप में पति – मिलन

मलयासुन्दरी की खोज में महाबल को लगभग एक वर्ष पूर्ण होने आया था। उसने भूख, प्यास और निद्रा को त्याग कर देश भर के बड़े-बड़े तमाम शहर, जंगल, पहाड़ और गुफायें ढूँढी, परन्तु उसे मलयासुन्दरी का समाचार तक कहीं भी न मिला। सिर्फ एक सागरतिलक-शहर ही बड़े शहरों में से खोज किये बिना रहा हुआ था, वह यहाँ भी आज संध्या के समय आ पहुँचा। भूंख प्यास और रास्ते के परिश्रम से आज वह बहुत ही थक गया था। परन्तु उसके मन में जो अपनी प्रिया का प्रेम था वह जरा भी कम न हुआ था। इसी कारण आज उसके मन में ये विचार पैदा हुए-- निमित्त-ज्ञानी के कथनानुसार आज साल भर से अधिक हो गया, परन्तु मिलने की बात तो दूर रही प्रिया का कहीं पर समाचार तक भी नहीं मिला। यदि कल इस शहर में भी कुछ पता न लगा तो आत्मघात कर इस भारभूत नीरस जीवन का अन्त कर देना योग्य है।

रात पड़जाने से महाबल शहर के बाहर ही उसी पुराने मठ में ठहर गया। जिसके पास खड़ी होकर कुछ देर पहिले मलयासुन्दरी ने मरणोन्मुख होकर पूर्वोक्त उद्गार निकाले थे। वहीं चिन्ता में पड़े हुए महाबल ने पूर्वोक्त विचारों की उधेड़-बुन में मलयासुन्दरी के अन्तिम शब्दों को सुन लिया था। इससे वह एकदम चकित हो उठ बैठा, और बोला अहा? यह तो मेरी ही

प्रिया के जैसी किसी दुःखित सुन्दरी के मृत्यु सूचक आन्तर शब्द मालूम होते हैं। यह विचार और यों बोलता हुआ सुन्दरी! ठहरो! साहस मत करो; वह दौड़कर उस अन्धकूप के पास आया। परन्तु दुर्दैव वशात् महाबल के वहाँ पहुँचने से पहले ही वह अन्धकूप में झंपापात कर चुकी थी। महाबल का भी अपनी प्रिया के प्रति कुछ कम प्रेम न था। अतः उसने भी मलयासुन्दरी के पीछे उसी अन्धकूप में झंपापात कर दिया।

गांधीनगर

उस जल रहित कुएँ में पड़े बाद महाबल ने अपनी तकलीफ को कुछ न गिनते हुए अपने से पहले पड़े हुए मनुष्य को देखा तो मालूम हुआ कि वह गाढ़ी मूर्च्छा में पड़ा है। और किसी विशेष वेदना का अनुभव करते हुए मंदस्वर से अव्यक्त स्थिति में प्यारे महाबल! दासी को भूल न जाना, यह शब्द बोलता था। यह सुन कर महाबल विस्मित हुआ। उसने अपने हाथ से उसके शरीर की शुश्रुषा करनी शुरु की।

कुछ देर बाद उसे कुछ चैतन्य आया। तब महाबल बोला–साहसिक युवक! तुम कौन हो? और किस दुःख से तुम इस कुएँ में पड़े हो?

मलयासुन्दरी ने अपने स्वामी महाबल का शब्द सुनकर कुछ उसी के विषय में अनुमान किया। इसलिये उसने कहा–मुझे भी आपसे यह सवाल पूछना है। परन्तु आप इससे पहले यह काम करें कि अपने थूक से मेरे मस्तक पे लगे हुए तिलक को मिटा दें। वैसा करने से मलयासुन्दरी का वास्तविक रूप प्रकट हो गया। वह अपने प्राण प्यारे को सन्मुख देख उसके गले में हाथ डाल कर उसके परोक्ष में सहेहुये असह्य दुःखों को याद कर वह फूट-फूट कर रोने लगी।

इस समय कुएँ की भीत के एक गड्डे में रहे हुए साँपने अपनी फणा बाहर निकाली। उसकी फणापर दैदीप्यमान् मणि होने से कुएँ के अन्दर दीपक के जैसा प्रकाश फैल गया। वियोगी दम्पती ने एक दूसरे के दर्शन किये। मणि द्वारा प्रकाश कर उस सर्प ने भविष्य में होनेवाले उनके उदय की सूचना दी। प्रिया से मिलने की उत्कंठा से ग्राम, नगर, जंगलों में भटकने वाला महाबल एक वर्ष के बाद ऐसे विषम स्थान में मणि के

प्रकाश में मलयासुन्दरी के सक्षात् दर्शन कर गद्गद हो उठा। उसने अत्यन्त प्रेम से उसे अपनी छाती से लगा लिया। इस समय वे दोनों अपने उपर पड़े हुए तमाम दुःखों को भूलकर जिस अनिर्वचनीय सुख का अनुभव कर रहे थे, भला उस सुख को लिखने की इस निर्जीव लेखनी में शक्ति कहां? दोनों की आंखों से आनन्द के अश्रु बहने लगे। कुछ देर तक आनन्द के वेग से हृदय भर आने के कारण वे एक दूसरे से कुछ भी न बोल सके। जब अश्रुओं के द्वारा हृदय का वेग दूर हो चुका तब महाबल बोला—प्रिये! तुम आज तक का तुम्हारा अनुभव किया हुआ सर्व वृत्तान्त मुझे सुनाओ।

मलयासुन्दरी ने पति की आज्ञा पाकर कंपित शरीर, दुःखित हृदय, और अश्रु-पूर्ण नेत्रों से अनुभव किया हुआ अपना दुःख गर्भित वृत्तान्त कह सुनाया।

उसके दुःख का बृत्तान्त सुनकर महाबल का हृदय दुःख से भर आया, फिर से उसके नेत्रों से आंसु बहने लगे। वह बोल उठा—हा! हा! प्रिये! क्या ऐसे दुःखों का अनुभव करने के लिये ही मुझसे तुम्हारा सम्बन्ध हुआ था? प्रिये! भोग के योग्य तुम्हारे इस सुन्दर शरीर ने किस तरह उन असह्य दुःखों को सहा होगा? प्रिये! बलसार ने तुमसे छीन कर उसने हमारे पुत्र को कहां रक्खा है?

मलया—स्वामिन्! उस सार्थवाह ने इसी नगर में किसी गुप्त स्थान पर पुत्र को रक्खा है। परन्तु निश्चित स्थान के बिना वह बालक हमें किस तरह मिल सकता है?

महाबल— प्रिये! किसी प्रकार इस कुएँ से बाहर निकला जाय तो फिर कुमार की तलाश करें।

मलया— स्वामिन! पृथ्वीस्थानपुर नगर से मुझे निकालने की चर्चा सुने बाद आपने इतना समय कैसे बिताया? इस प्रश्न के उत्तर में महाबल ने पल्लीपति की विजय से लेकर आजतक का सर्व वृत्तान्त कह सुनाया। अपनी बीती-बातों में ही उन्होंने शेष रात पूरी की। इधर प्रातःकाल होने पर जब मलयासुन्दरी को गायब पाया, तब पहरेदार ने शीघ्र ही राजा कंदर्प

को उसके भागजाने का समाचार दिया। राजा अनेक राजपुरुषों को साथ मलयासुन्दरी के कदम दरकदम सावधानी से उसकी खोज निकालता हुआ उसी अन्धकूप के पास आ पहुँचा। कुएँ में नजर डालने से वे दोनों स्त्री पुरुष देखने में आये।

राजा समझ गया कि यह पुरुष कोई इस स्त्री का अवश्य सगा सम्बन्धी होगा। इसीलिये उसने इस वक्त अपना स्वाभाविक स्त्री रूप बना लिया है, और उससे वार्त्तालाप कर रही है, इत्यादि कुछ सोचकर राजा ने उनसे कहा मैं तुम दोनों को अभयदान देता हूँ। तुम दोनों कुएँ से बाहर निकलो। रस्सियों के साथ बांधकर माञ्चियां कुवे में लटकाई जाती हैं; उनपर चढ़ बैठो। मैं उन्हें खिचवाकर तुम्हें बाहर निकलवाता हूँ।

मलयासुन्दरी ने महाबल से कहा–प्रियआर्यपुत्र! यह वही कंदर्प राजा है, जो विषयांध होकर मेरी अत्यन्त कदर्थना कर रहा है। यह मेरे पद-चिन्हों को देखता हुआ यहां आ पहुँचा है। मुझे यह शक है, कि मुझ पर आसक्त होने के कारण यह दुष्ट आपको मार न डाले।

महाबल बोला– प्रिये! इस बात का मुझे भय नहीं है, किसी तरह इस कुएँ से बाहर निकल जाऊँ, फिर तो इसके निग्रह का कोई न कोई उपाय ढूंढ निकालूँगा। तुम किसी तरह का भय मत करो, एक मंचिका पर तुम बैठ जाओ, और दूसरी पर मैं बैठता हूँ।

मलयासुन्दरी पति की आज्ञा मंजूर कर एक मंचिक पर बैठ गई और दूसरी पर महाबल। मंचिकायें खींची जाने लगीं, मानों राजा अपने वंशका उच्छेदन करने के लिए ही पाताल से नागकुमार को आकर्षण कर रहा हो, इस तरह इन दम्पति की मंचिकायें कुएँ के किनारे तक आ गई तब राजा ने पहले मलयासुन्दरी की मंचिका बाहर निकलवाई। किनारे के नजदीक आई हुई मंचिका पर नागकुमार के समान रूपवान वैठे हुए महाबल को देखकर राजा विचार में पड़ गया। ऐसे सुन्दर पति-वाली स्त्री ताड़ना-तर्जना करने पर भी मेरे जैसे मनुष्य को कदापि स्वीकार न करेगी। इसलिए इस सुन्दर युवकको बाहर निकालना ठीक नहीं। यह सोच उसने

तलवार से महाबल के मंच का रस्सा काट दिया। रस्सा काटते ही निरावलम्बन हो महाबलकुमार अपने मंच सहित शीघ्र ही वापिस कुएँ में जा गिरा। यह देख मलयासुन्दरी भी फिर से वापिस कुएँ में गिरने के लिये छटपटाई। परन्तु राजा ने उसको झट से पकड़ लिया और उसे अपने महल में ले गया। महल में लाकर राजा ने मलयासुन्दरी से कहा–सुन्दरी! वह मनुष्य कौन था? उसका नाम क्या है? वह तुझे किस तरह मिला? वह कहां का रहने वाला है? इत्यादि अनेक प्रश्न पूछे, परन्तु मलयासुन्दरी को इन प्रश्नों का उत्तर देने का समय ही कहां था? उसको तो अपने पति के वियोग में विवश हो रुदन करने के सिवा और कुछ न सूझता था। खाने-पीने के लिये आग्रह करने पर भी उसने साफ-साफ कह दिया कि जब तक मैं उस मनुष्य का दर्शन न करूंगी तबतक अन्नजल ग्रहण न करूंगी।

कंदर्प ने सोचा उस पुरुष को कुएँ से बाहर निकलवाना मेरे लिए किसी तरह भी लाभदायक नहीं है। और इसे अन्तेउर में रखना भी योग्य नहीं। क्योंकि यदि इसने वहांपर रहकर पुरुषरूप कर लिया तो यह मेरे सारे अन्तेउर को खराब करेगा। इत्यादि विचारों से मलयासुन्दरी को राजपुरुषों के विशेष पहरे में राजा ने एक पुराने महल में रखवा दिया। वह सारा दिन मलयासुन्दरी ने पति-वियोग में रुदन करते हुए ही पूर्ण किया।

पुनः पति-वियोग में मलया को सर्प-दंश

जिस मकान में वियोगिनी मलयासुन्दरी को रक्खा गया था, वह राज कैदियों को बंद करने के लिये एक पुराना कारा-गृह था। उसके पास एक भी दासी नहीं रक्खी गई थी। सिर्फ उस महल के बाहर चारों तरफ राजा के सिपाही धूम रहे थे। रात्रि पड़ने पर चारों तरफ अंधकार पसर गया था । मलयासुन्दरी पति दुःख से दुःखित हो जल हीन मीन के समान जमीन पर तड़प रही थी। इसी समय उस जगह कहीं से एक भयंकर जहरीला सर्प आ गया और उसने मलयासुन्दरी को डंस लिया।

मृत्यु बुरी चीज है। मलयासुन्दरी एकदम चिल्ला उठी। हाय मेरे पैर में यह दुष्ट सर्प आ लिपटा! यों बोल कर वह देव गुरु का स्मरण करने

लगी। चिल्लाहट सुन कर एकदम पहरेदार आ पहुँचे। उन्होंने वहां सांप को देखकर उसे किसी शस्त्र से मार दिया, और शीघ्र ही जाकर राजा को खबर दी कि मलयासुन्दरी को जहरीले सांप ने डंस लिया है। विषय-स्नेही राजा यह खबर सुनकर, आकुल-व्याकुल हो शीघ्र ही वहां आ पहुँचा। राजा ने तुरन्त ही शहर में से मंत्रवादियों को बुलवाया। जड़ी बूंटी सांप का जहर उतारने के तमाम साधन मंगाये और उनका प्रयोग भी करवाया परन्तु तमाम प्रयोग निष्फल गये।

प्रातः काल होते ही राजा की ओर से ढिंढोरा पिटवाया गया। परदेश से आई हुई अपनी एक रखेलस्त्री को रात्रि में भयंकर सर्प ने डंस लिया है, जो मनुष्य उसका विष उतार देगा, उसे राजा अपना रणरंग हाथी, एक राज-कन्या और देश का एक प्रान्त देगा। शहर भर में डिंडिम-नाद बजता रहा परन्तु एक भी मनुष्य उसे रोकने वाला न मिला। जब वे राज-पुरुष वापिस राज-महल को लौट रहे थे, तब उन्हें एक विदेशी युवक मिला। उसके पूछने पर उन्होंने उसे सब समाचार कह सुनाया। वह परदेशी युवक बोला चलो, मुझे राजा के पास ले चलो, मैं उस स्त्री को अच्छा करूंगा। राज-पुरुष उसे साथ ले शीघ्र ही राजा के पास लाये। उस युवक को देख राजा एकदम आश्चर्य चकित हो उसकी ओर आंखें फाड़ कर देखता हुआ सोचने लगा अरे! यह तो वही मनुष्य मालूम होता है जिसे हमने वापिस कुएँ में डाल दिया था! इसे किस दुष्ट ने बाहर निकाला होगा? नौकरों से बोला—यह कौन दुष्ट मनुष्य है? नौकर बोला—महाराज! सारे शहर में पटह बजाया गया परन्तु किसी भी मनुष्य ने स्वीकार न किया। रास्ते में यह परदेशी मनुष्य मिल गया, यह उस स्त्री का विष उतारना मंजूर करता है। राजा—(गुस्से को दबा कर) अच्छा आप खुशी से शीघ्र ही उस सुन्दरी का विष उतारिये, मैं आपको अपना रण-रंग हाथी, एक राज-कन्या, और देश का एक प्रान्त दूंगा।

महाबल—महाराज! मुझे आपका इनाम कुछ नहीं चाहिये। मैं परदेशी मनुष्य हूँ, और यह मेरी ही पत्नी है। यह दैव की मारी घर से निकली हुई है। मैं इसका विषापहार कर अवश्य ही इसे आराम कर दूंगा आप इसे ही

मुझे दे देना। मुझे अन्य कुछ न चाहिये। यह सुन राजा स्तब्धसा हो गया। उसे कुछ भी उत्तर देना न सूझा। वह कुछ देर सोच कर बोला—अच्छा ऐसा ही सही, एक काम हमारा बतलाया हुआ और कर देना, फिर हम तुम्हें इस स्त्री को भी दे देंगे। महाबल ने यह बात मंजूर कर ली। राजा महाबल को साथ लेकर मलयासुन्दरी के पास आया। इस समय मलयासुन्दरी के सारे शरीर में विष व्याप्त हो चुका था, और वह गाढ़ मूर्च्छा में अचेतन हो पड़ी थी।

अपनी प्रिया की यह दुर्दशा देख महाबल का हृदय भर आया। उसने बड़ी मेहनत से अपने अश्रु-प्रवाह को रोका। वह राजा से बोला—राजन् ! इसके शरीर में तो श्वासोश्वास की क्रिया भी मालूम नहीं होती। तथापि मैं अपना प्रयोग इस पर शुरु करता हूं। आप यहाँ पर सुगन्धी वाला जल छिड़कवा कर तमाम मनुष्यों को बाहर चले जाने की आज्ञा करें। महाबल ने उस जगह को पवित्र बनवा कर वहां एक मंडल बनवाया, और फिर राजा आदि सब को बाहर बिठा दिया।

एकान्त में महाबल ने विष उतारने का प्रयोग शुरु किया। उस मण्डल की मंत्रार्चन-विधि पूरी कर, महामन्त्र का स्मरण करके उसने अपने पास से एक विषापहारक मणि निकाली। उसे स्वच्छ जल से धोकर वह पानी मलयासुन्दरी के नेत्रों पर, मुंह पर और सारे शरीर में छिड़का गया। कुछ पानी पिलाया भी गया। मणि-मन्त्र और औषधियों में अचिन्त्य प्रभाव होता है। इसी लिये इस मणि-जल के प्रभाव से उस महासती मलयासुन्दरी के नेत्र कमल के समान खुलने लगे। श्वासोश्वास चलने लगा। जैसे नींद से उठती हो वैसे धीरे-धीरे उसे पूर्णतया होश आ गया महाबल भी बहुत खुश हो गया।

इस तरह महासती मलयासुन्दरी संपूर्णतया विष के उतर जाने पर कुछ देर बाद आनन्द के साथ बैठी हो गई। अपने पास महाबल को बैठा देख उसके हर्ष का पार न रहा। वह एकदम उससे भेंट पड़ी और हर्ष के आंसू बहाती हुई बोल उठी—प्रियतम! आप उस अन्धकूप से किस तरह निकले?

महाबल—प्रिये! जब राजा ने मेरी मंचिका की रस्सी काट दी थी तब मैं मांची सहित वापिस कुएँ में गिर पड़ा। मंचिका पर बैठा होने के कारण मुझे विशेष चोट न लगी। जिसने अपनी मणि से कल रात को हमारे मिलन के समय प्रकाश किया था, वह सर्प भी उस कुएँ में ही था। वह फिर से निकला तब मैंने उसके मणि प्रकाश में कुएँ के चारों तरफ देखा। उस पर एक शिला लगाई हुई थी। दरवाजा होने की शंका से मैंने उस शिला को दूसरी तरफ खींच लिया। द्वार खुल गया, और वह सर्प धीरे-धीरे उसके अन्दर चलने लगा। मैंने भी साहस कर उस द्वार में प्रवेश किया। वह सर्प रात में मशाल धारी के समान मेरे आगे-आगे चल पड़ा। मणि के प्रकाश से मुझे उस गुफा में बड़ी सहायता मिली। मैंने यह निश्चित किया कि यह सुरंग किसी चोर की बनाई हुई होनी चाहिये। और उस कुएँ से बाहर निकलने का द्वार भी अवश्य होना चाहिये।

इन्हीं विचारों में मैं कितनी एक दूर तक आगे गया; तब अकस्मात् वह सांप न जाने क्यों एकदम गुम हो गया, और सुरंग में अन्धकार छा गया। परन्तु मैं भी साहस धारण किये जन्मांध के समान उस घोर अन्धकार में आगे बढ़ता ही गया। इसी तरह चलते हुए मैं एक शिला के साथ टकरा गया। उस शिला पर जोर के साथ लात मारने से सुरंग का दरवाजा खुल गया। जिस तरह गर्भाशय से प्राणी बाहर निकलता है ठीक उसी प्रकार मैं उस गुफा से बाहर निकला।

फिर मैंने उस सांप की घसीट देखी। मैं उसके अनुसार कुछ दूर तक गया तो वह सर्प मुझे एक शिला पर कुण्डली लगाये बैठा दिखाई दिया। नागदमनी विद्या द्वारा मैंने उस सर्प को वश किया, और उसके मस्तक से अचिंत्य प्रभाव वाली उस मणि को ग्रहण किया। पहाड़ से उतरने वाली नदी के नजदीक श्मशान भूमि में सुरंग द्वार होने से मुझे विश्वास होता है कि वह अवश्य ही किसी चोर का बनाया हुआ गुप्त स्थान है। परन्तु देखने से यह मालूम हुआ कि उस गुफा में बहुत दिनों से किसी मनुष्य का आना जाना न होने के कारण वह चोर शायद मर गया होगा। उस सुरंग द्वार को मैं फिर उसी पत्थर से ढक कर आया हूँ।

यह राजा अनर्थ और अन्याय करेगा यह जानते हुए भी तेरे विरह को सहन करने में असमर्थ होकर मैं वहीं से सीधा शहर की ही तरफ चला आ रहा था शहर में आकर मैंने पटह बजता सुना। उसका कारण पूछने पर मालूम हुआ कि तुम्हें सांप ने डंस लिया है। इसी कारण मैं राजपुरुषों के साथ राजा के पास आया और उसकी सम्मत्ति से अपने साथ लाये हुए इस प्रभाविक मणि से मैंने तुम्हें इस समय जीवित किया है। प्रिये! अब तुम जरा भी चिन्ता न रखना। मैंने राजा से खुशी पूर्वक तुम्हें अपने साथ ले जाने का वचन ले लिया है। इससे मुझे विश्वास है कि अब तुम्हें वह मेरे अधीन कर देगा। यह बात सुन मलयासुन्दरी अत्यन्त खुश हुई।

महाबल ने अब राजा को अन्दर बुला लिया और कहा—राजन! देखिये, मैंने इस सुन्दरी को बिलकुल अच्छा कर दिया है। मलयासुन्दरी को अपने पति के साथ अच्छी अवस्था में बैठी बात करती देख राजा प्रेमावेश से पराधीन हो मस्तक हिला कर बोला–अहा हा! जिसके ज़ीवन की आशा न रही थी। उसे हमारे सुख के साथ तुमने जीवित दान दिया है, धन्य है—तुम्हारे विद्या-सामर्थ्य को सत्पुरुष! तुम्हारा नाम क्या है? महाबल बोला—राजन! मेरा नाम सिद्धराज है। राजा बोला सिद्धराज! कल से इस स्त्री ने जरा सा भी भोजन नहीं किया है अतः पहले तुम इसे जैसा रुचे वैसा भोजन कराओ।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kalkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-355-3586

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 464-2783

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (Resi) 352-8387/9885

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: 247-77450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-61256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Kolkata - 700 068
Ph: 472-0610

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street Kolkata - 700 001,
Ph: 235 2759 Fax: 033-252902

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203, 1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

DHARAM CHAND SARAOGI
'Jain House' 8/1 Esplanade East
Kolkata - 700 069

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Explanade East
Kolkata - 700 069

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

Shree Shiv Kumar Jain
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kalkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXETRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and cables
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110 043, Ph: (O) 501-6527
(Resi) 545-3415, 542-3304
Mobile: 9811075330

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare arts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Kolkata - 700 001
Phone : 235 7312, (Shop) 230 1180 (Resi) : 241 6831

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

S. VINAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Kolkata - Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Kolkata - 700 073

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. N. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007

अangan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
Narkeldanja Main Road Ph : 3592031
e-mail : www.jiggis.com

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:
Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayaputi, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in-

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

**MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER
MANUFACTURER
IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO
MANUFACTURE
132 KV CLASS TRANSFORMERS**

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

**18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016**
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

Subhash
Projects and
Marketing
Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITH NATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta-700016 Ph:(033)245-7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Lisor Road. Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metre, no less.

Building a floating pumping station on the fierce of Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproff Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला

१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कोलकाता – ७०० ००७

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीस पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे

भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कोलकाता

महावीर वाणी

१. सत्य का सूर्य सभी के आंगन को प्रकाशित करता है। उसकी किरणें सर्वत्र विकीर्ण हो सकती है।

२. जो आश्रव अर्थात् बन्धन के कारण है, वे ही परिस्रव मुक्ति के कारण हो सकते हैं तथा जो मुक्ति के कारण हैं, वो ही बन्धन के कारण बन सकते हैं।

३. आत्मा सामयिक (समत्ववृत्ति) रूप है और समत्व भाव को प्राप्त कर लेना ही आत्मा का साध्य है।

४. सिर मुड़ा लेने से कोई श्रमण नहीं होता, ओंकार का जाप करने से कोई ब्राह्मण नहीं होता, जंगल में रहने से कोई मुनि नहीं होता और कुशचीवर धारण करने से कोई तापस नहीं होता। ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण, ज्ञान से मुनि और तपस्या से तापस होता है।

५. किसी के प्राणों को पीड़ा देना अच्छा नहीं बल्कि दूसरों की पीड़ा की रक्षा के लिये इतना ही सावधान होना चाहिये जितना कि अपने प्राणों के लिये।

-----®-----

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-**M.V.ARCADIA PROGRESS** (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1
Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE:
SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B /R.N.P.-45
Vol. XXV No. 7 TITTHAYARA October 2001
Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

आ. श्रीकै[illegible]सूरि ज्ञानमन्दिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि. 382009

આ.
કૈલાસસા
જ્ઞાનમ
કોબા,ગ

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225